

नवसृजन का विज्ञान और युग-अवतरण

वैज्ञानिक तथ्यों और तर्कों के आधार पर मानव चेतना का मार्गदर्शन (अध्याय ५-९)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “ ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग परिवर्तन का वैज्ञानिक मॉडल



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

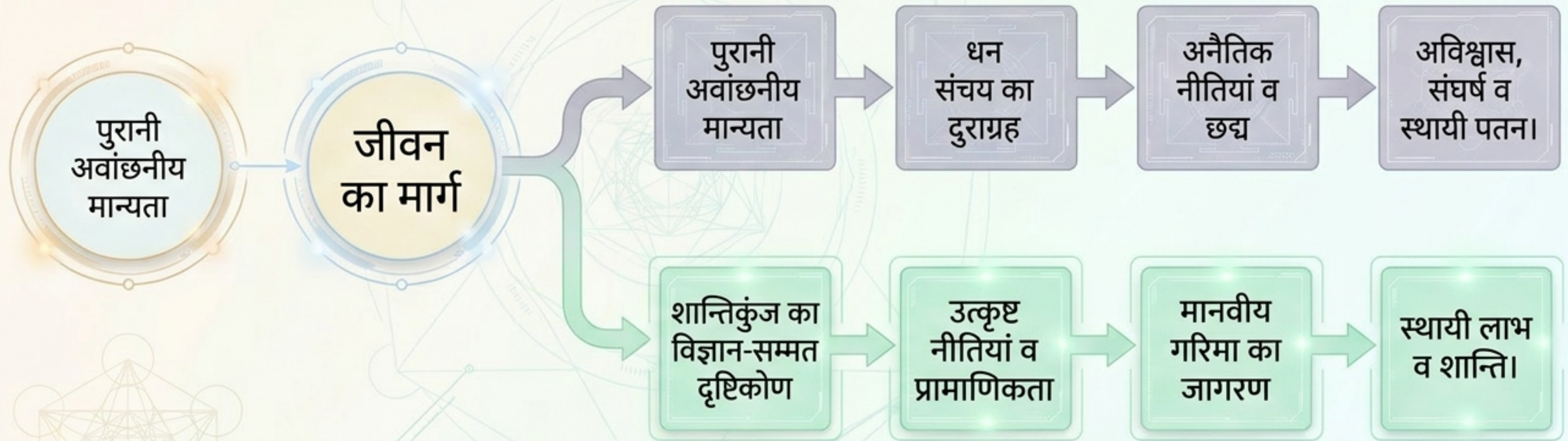
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शा को मेरे क्रान शरीर करे साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्लार्मि साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रगति का नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण



वैज्ञानिक निष्कर्ष: उत्कृष्टता की नीति ही वस्तुतः लाभदायक है।
सत्य और औचित्य अंततः समाज-निष्ठा और व्यवहारिक सफलता का मूल आधार हैं।

नारी सशक्तीकरण: २१वीं सदी की धुरी

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा
आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सन्तुलन: नर-नारी की समान भागीदारी
→ नवयुग की पूर्ण क्षमता का उपयोग।

निष्कर्ष: कोई भी समाज अपनी आधी शक्ति (नारी) को पंगु रखकर द्रुतगति से प्रगति नहीं कर सकता। यह सदी नारी-विशिष्टता की अवधि है।

जागरण: प्रौढ़ शिक्षा व वैचारिक क्रान्ति
→ शान्तिकुंज में महिलाओं द्वारा अध्यापन व नेतृत्व।

अवरोध: अज्ञान व पर्दा प्रथा
→ सामाजिक ऊर्जा का ५०% हिस्सा निषिध्य।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

अंधविश्वास का मनोवैज्ञानिक अंत

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का

प्रकाश जन-जन के बीच पहुँचना ही ज्ञान का आसे

सद्व्यवहार कहिये।

बच्चों से कहिये कि माँ-बापों के शरीर के

क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

(गायत्री परिवार के संस्थापक)

समस्या:
अज्ञान

भय व
मानसिक तनाव

भ्रांतियां
(भूत-प्रेत, जादू-टोना)

वैज्ञानिक हस्तक्षेप:
सद्बुद्धि
(Rational Thinking)
→
सत्य की पहचान

सन्देह व
आपसी कलह।

समाधान:

भ्रांतियों का वाष्पीकरण।
जब समझदारी का उद्भव होता है,
तो अविश्वास का सारा जाल-जंजाल
स्वतः तिरोहित हो जाता है।

स्वास्थ्य का वैज्ञानिक रहस्य: मनोदैहिक विज्ञान

संचालक: मन और मस्तिष्क

इनपुट (कारण):
विचार (Thoughts)



विकृति: कुविचार व उद्विग्नता
→ हार्मोनल असंतुलन
→ काल्पनिक व वास्तविक बीमारियां।
(बीमारियों की जड़ मन के भीतर है,
शरीर में केवल उनका आभास होता है))

समाधान: शांत,
सकारात्मक व सद्भावपूर्ण विचार
→ अंगों का सही कार्य
→ प्राकृतिक स्वास्थ्य।



समस्याओं का मूल: इंद्रिय निग्रह और संयम

इंद्रिय (Sense)	प्राकृतिक आवश्यकता (Natural Need)	दुरुपयोग का परिणाम (Consequence)	वैज्ञानिक समाधान (Scientific Solution)
स्वादेन्द्रिय (Taste)	शरीर का पोषण	अभक्ष्य/अत्यधिक सेवन → पाचन-तंत्र में व्यतिक्रम व रोग	सन्तुलित आहार व संयम
कामुकता (Sex)	प्रजनन	मानसिक विकार व वासना → ऊर्जा का भारी क्षय	इन्द्रिय निग्रह व जीवन ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन

निष्कर्ष: इच्छा-आकांक्षाओं के दौड़-धूप की जगह मात्र संयम-साधना से अधिकांश समस्याएं सुलझ सकती हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युगांतरीय चेतना: बीज से वटवृक्ष

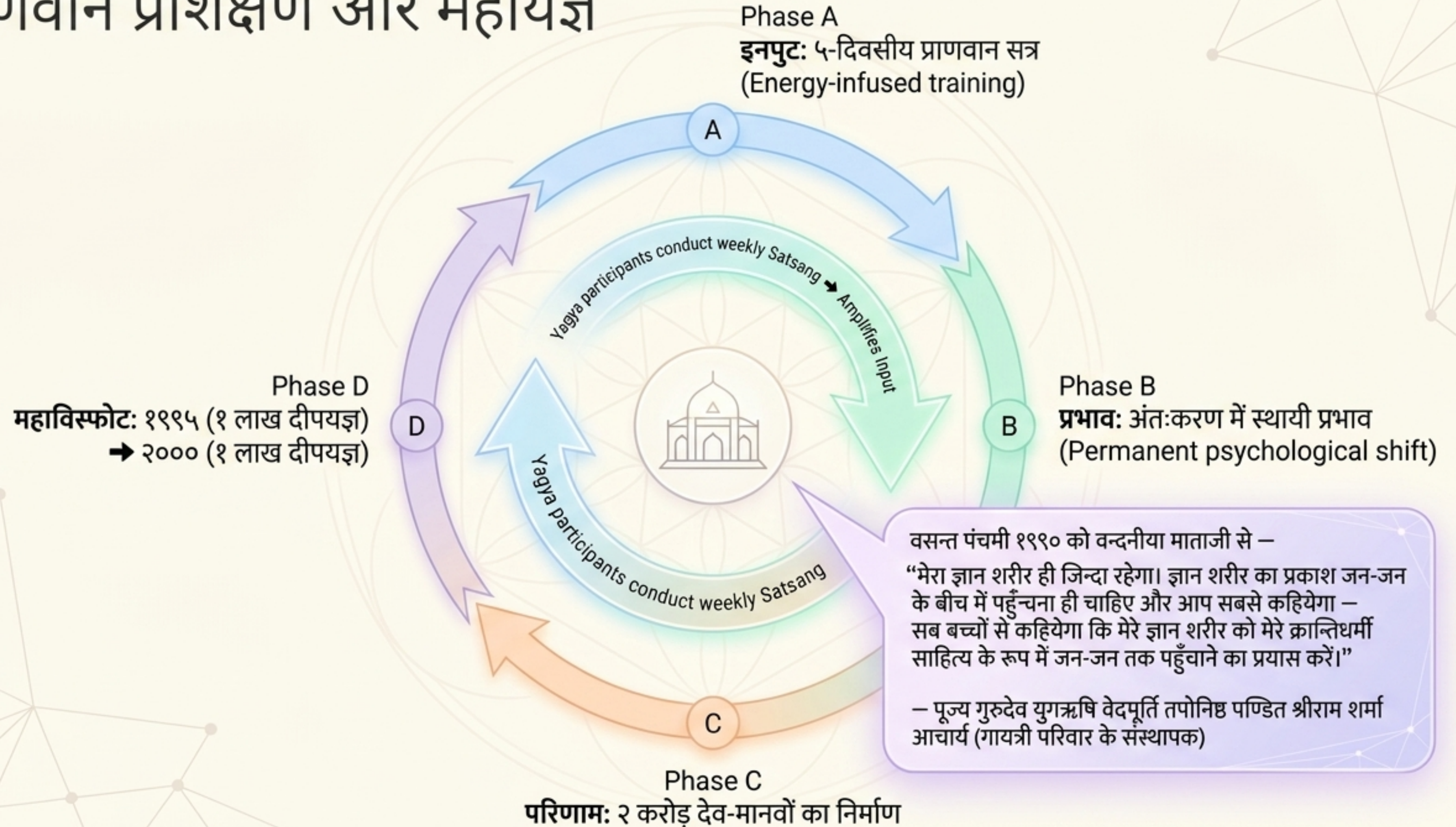
२००१ - २०१९ (२१वीं सदी):
तूफानी गति से परिवर्तन व बोधिवृक्ष का निर्माण।
(Exponential change replacing 2000 years
of corruption in just 100 years)

१९९० - २००० (युगसंधि):
जोतने, बोने, उगाने व रखवाली का दशक
(Intensive Care Period)

१९९० (वसंत पर्व): बीजारोपण
(Start of specific subtle activities)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्राणवान प्रशिक्षण और महायज्ञ



भौतिक शरीर बनाम सूक्ष्म-कारण शरीर

स्थूल शरीर (Physical Body - दृश्य)

- स्थान व समय की सीमाओं से आबद्ध।
- धीमी गति और विधि-व्यवस्था में अधिक समय खर्च।
- सीमित प्रभाव क्षेत्र।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा ज्ञान शरीर का प्रकाश जन रहा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर का कहियेगा कि जन-जन तक पहुँचाने के रूप में जा-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगान्धवि वेवमूष्णि पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सूक्ष्म व कारण शरीर (Subtle/Causal Body - अदृश्य)

- असीमित शक्ति (Physical body से असंख्य गुना अधिक शक्तिशाली)।
- द्रुतगति (Instantaneous reach) व बिना झंझट कार्यक्षमता।
- विश्वव्यापी कार्यक्षेत्र। अदृश्य जगत से बड़े परिवर्तनों का संचालन।

सूत्र-संचालक की नई वैश्विक भूमिका

स्थूल-शरीर को समेटकर व्यापक स्तर पर सुधार की चरमसीमा।



निष्कर्ष: जो कार्य सामान्य भौतिक प्रयासों से सम्भव नहीं, वे ब्राह्मी चेतना से जुड़े कारण-शरीर द्वारा सम्पन्न किए जा रहे हैं।

मानव चेतना का विकासक्रम

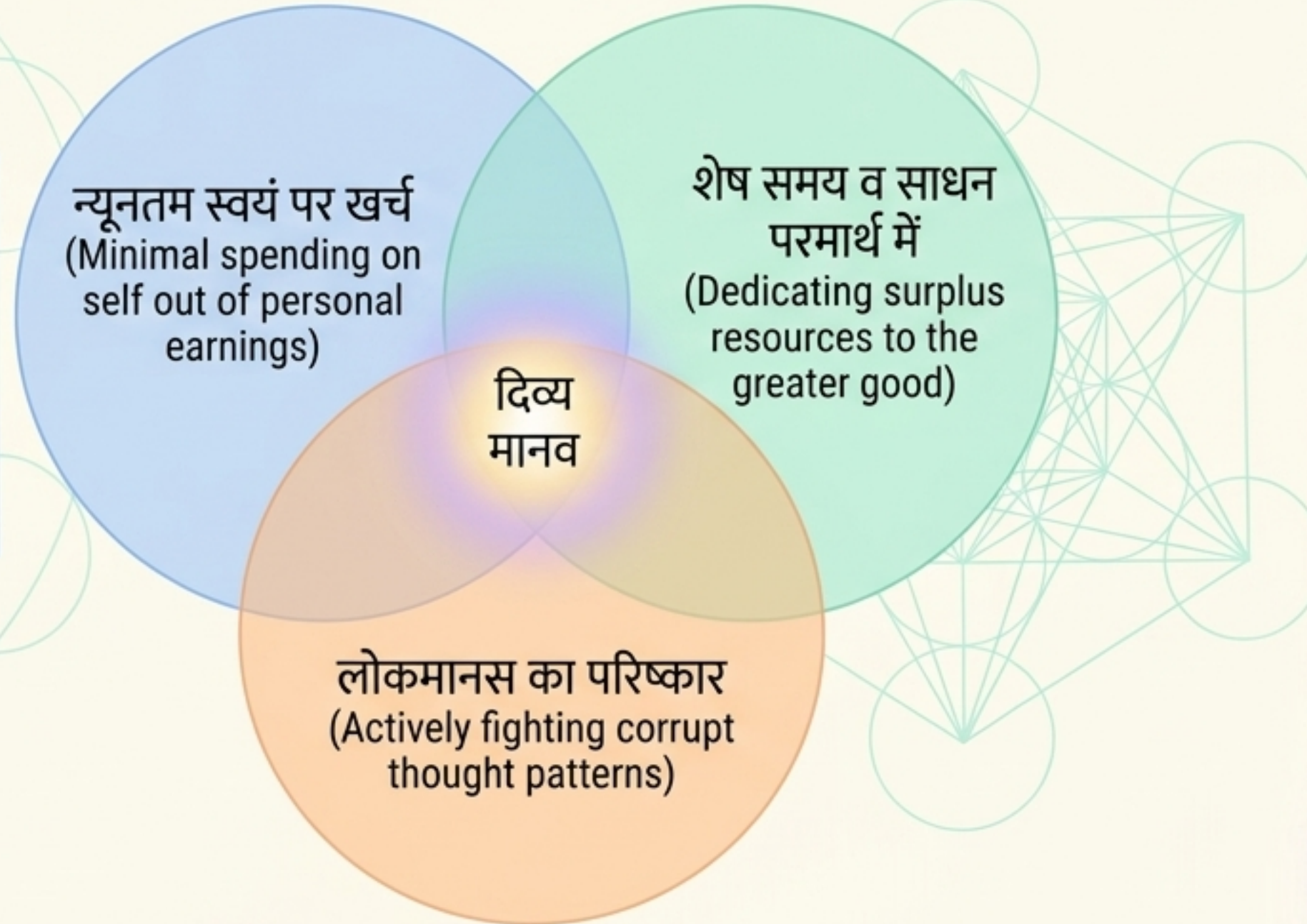


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

देवदूतों का अवतरण: लक्षण और पहचान

नवयुग के देवदूतों की पहचान



निष्कर्ष: भगवान् अपना कार्य इन्हीं प्रतिभावान महामानवों के माध्यम से कराते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग-अवतरण का समग्र ब्लूप्रिंट



ज्ञान शरीर का जन-जन तक विस्तार

लक्ष्य: २० युगसाहित्य की पुस्तकों को
हर शिक्षित व्यक्ति तक पहुँचाना।

मूल मन्त्र: भौतिक शरीर की सीमाएं हैं,
किन्तु 'ज्ञान शरीर' अमर और असीमित है।



प्रक्रिया: स्वयं पढ़ें → जो पढ़ नहीं सकते,
उन्हें पढ़कर सुनाएं → आगे साझा करें।

निष्कर्ष: यही २१वीं सदी के नवसृजन में
महाकाल की तैयारी का मुख्य अंग है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)